भारतीय विदेश नीति का समसामयिक विश्लेषण

✧ डॉ. मंजू शर्मा

किसी भी राज्य की विदेश नीति मुख्य रूप से कुछ सिद्धान्तों, हितों एवं उद्देश्यों का समूह होता है, जिनके माध्यम से वह राज्य दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर उन सिद्धान्तों की पूर्ति करने हेतु कार्यरत रहता है।1 इसी प्रकार प्रत्येक राज्य की अपनी विदेश नीति होती है जिसके माध्यम से वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने सम्बन्धों का निरूपण करते हैं। मॉडलस्की के अनुसार–''विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है, जिसके द्वारा राज्य दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को बदलने तथा अपनी गतिविधियों को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में ढालने की कोशिश करता है।2 विदेश नीति में परिवर्तन के साथ–साथ कई बार निरन्तरता की भी आवश्यकता होती है। क्योंकि विदेश नीति परिवर्तन व यथास्थिति दोनों प्रकार की नीतियों का समन्वय होती है।

संक्षेप में विदेश नीति का अर्थ एक राज्य के विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा निर्धारित उन गतिविधियों की सीमाओं से है जिनके माध्यम से वे अपने 'संभावित' राष्ट्रीय हितों की पूर्ति हेतु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से जुड़े अन्य राज्यों के साथ कार्यरत रहते हैं।3 किसी भी देश की विदेश नीति को निर्धारित करने वाले मूलतः दो प्रकार के निर्धारक तत्व होते हैं–आन्तरिक एवं बाह्य। इन निर्धारक तत्वों के आधार पर विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं। भारत की विदेश नीति में प्रमुख रूप से क्षेत्रीय अखण्डता, प्रमुखता व स्वतन्त्रता, विश्व शान्ति, आर्थिक विकास, मानवीय सत्यता आदि मुख्य उद्देश्य संविधान निर्माण के समय संविधान सभा द्वारा निश्चित किए गए थे, जो वर्तमान में भी मान्य है। उन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निर्वाचकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये निर्णायक एक स्थापित व्यवस्था एवं संस्थाओं के अन्तर्गत इस नीति को निर्धारित करने व लागू करने के सन्दर्भ में रणनीति तैयार करते हैं। भारत की विदेश नीति–निर्माण में संसद, प्रधानमंत्री, केबिनेट, विदेश मन्त्रालय तथा विदेश–विभाग आदि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में क्षेत्रीय स्तर पर भारत की मजबूत स्थिति विश्व राजनीति में उसकी भूमिका के निर्धारण के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है। जब तक भारत अपने पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्धों को सामान्य नहीं रखेगा तथा क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान करने में पहल नहीं करेगा, तब तक उसकी अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका को सन्देह की दृष्टि से देखा जाएगा। दूसरी ओर वर्तमान वैश्वीकरण व उदारीकरण के वातावरण में यह आवश्यक हो गया है कि विश्व अर्थ–व्यवस्था के साथ अपने को जोड़ने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक गठबन्धन को शक्तिशाली बनाना होगा। इस दृष्टि से वर्तमान में भारत के लिए क्षेत्रीय नीति महत्वपूर्ण बन गई है।

एक समय था जब भारतीय नेतृत्व विश्व राजनीति में एक सक्रिय व अग्रणी भूमिका की महत्वाकांक्षा रखता था। गुटनिरपेक्षता की नीति के माध्यम से यह महत्वाकांक्षा पूरी करने में सफलता भी मिली। इस प्रकार की अस्पष्टता व अनदेखेपन के दुष्परिणाम भी भारत को भुगतने पड़े, क्योंकि भारत के लगभग सभी पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण रहे। कालान्तर में भारत ने अपने क्षेत्रीय दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का प्रयास किया।5

वर्तमान समय में पूर्व सोवियत संघ व पूर्वी यूरोप के घटनाक्रम (1989–91) खाड़ी युद्ध–द्वितीय (2003) के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ की गतिविधियों में आए परिवर्तन, गुट–निरपेक्ष आन्दोलन के समक्ष प्रासंगिकता का सवाल, विश्व व्यापार संगठन के गठन, विश्व व्यवस्था का भूमण्डलीकरण, व्यापक परमाणु परीक्षण संधि पर हस्ताक्षर, भारत द्वारा पोखरण–द्वितीय परमाणु विस्फोट, पाकिस्तान द्वारा छंगाई में हुए परमाणु परीक्षण, कारगिल संघर्ष, 11 सितम्बर की आतंककारी घटना तथा भारतीय संसद पर प्रयोजित आतंकवादी हमला, ईरान का परमाणु मसला तथा भारत–अमेरिका के बीच सम्पन्न परमाणु संधि के बाद विश्व राजनीति में मूलभूत परिवर्तन के कारण भारत की विदेश–नीति के समक्ष भी कई चुनौतियां उपस्थिति हो गई है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्वान तो भारत के समक्ष इन चुनौतियों की तुलना 1947 के समय से करते हैं। क्योंकि उन जटिल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में भारत को एक सशक्त विदेश नीति की रचना करनी पड़ी थी। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय घटना क्रम उस समय से तो भिन्न है, लेकिन पेचिदा व विचित्र है, जिसको अनुकूल बनाना या उसके विरूद्ध अपने राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति कने हेतु भारत की विदेश नीति को अत्यन्त दुर्गम मार्ग पर चलना होगा। क्योंकि इस समय विश्व राजनीति के प्रति गहरी दूरदर्शिता रखने वाले नेतृत्व का अभाव है दूसरी ओर एक सकारात्मक विदेश नीति निर्धारित करने वाले विदेश मन्त्रालय में विदेश नीति के मर्मज्ञ अधिकारियों की संख्या भी कम है।

वर्तमान में विश्व व्यवस्था राजनैतिक व सामरिक सन्दर्भों में द्वि–ध्रुवीय पद्धति से बहु–ध्रुवीय होती जा रही है, शीत युद्ध के पश्चात विश्व व्यवस्था राजनैतिक व आर्थिक प्रजातन्त्र की ओर अग्रसर हो रही है, तकनीकी विकास

सहआचार्या, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

तीव्रगति से हो रहा है। परिणामस्वरूप भारतीय विदेश नीति को अब प्रस्तुत चुनौतियों की जटिलताओं का सही मूल्यांकन कर नए विकल्पों की खोज करनी होगी। एक स्वतन्त्र, सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र की विदेश नीति के तीन मूल तत्व होते हैं–देश और समाज संकट मुक्त रहे, यदि संकट आ जाए तो वह बढ़े नहीं तथा विवादों का निराकरण बिना युद्ध किया जाए। भारत को पड़ौसी राष्ट्रों के साथ चल रहे विवादित मुद्दों को सुलझाने में इन्हीं तत्वों को आधार बनाना चाहिए। दूरदर्शितापूर्ण क्रियात्मक सहयोग की नीति अपनानी चाहिए। यह सहयोग सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में सुनिश्चित करना चाहिए। भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों को परिवर्तित आन्तरिक राजनीतिक वातावरण व अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश को दृष्टिगत रखकर नई दिशा देनी चाहिए। भारत और चीन के रिश्तों को अब न तो हिन्दी–चीनी भाई–भाई वाले नजरिए से देखा जा सकता है और न ही 1962 के युद्ध में हुई जय–पराजय के नजरिये से। चीन ने सहज सम्बन्धों की शुरूआत की है। क्योंकि लद्दाख के अक्साईं चीन इलाके की उसे सामरिक जरूरत है, अफगानिस्तान से लगा उसका सिक्यांग प्रान्त तालिबानी जेहादियों का अड्डा बन चुका था। लेकिन बदलते परिवेश में चीन–तिब्बत सीमा के मसले को समझदारी से सुलझा रहा है। अरूणाचल प्रदेश दून घाटी और सिक्किम पर अपने दावों को छोड़ चुका है। अक्साई चीन को लेकर वह समझौते को तैयार है।

भारत–बांगलादेश के मध्य भी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण नहीं हैं। नदी जल बंटवारा, अन्तः क्षेत्र विवाद, चकमा शरणार्थियों की समस्या, तस्करी की समस्या, अवैध नागरिकों की समस्या तथा बंगलादेश की भूमि पर भारत विरोधी आतंकवादियों के कैम्प आदि मुद्दे विवाद के कारण बने हुए हैं। लेकिन वर्तमान में इस ओर कुछ सकारात्मक संकेत अवश्य मिलते हैं। दक्षेस में दोनों देशों की भागीदारी व इसके माध्यम से बढ़ते क्षेत्रीय सहयोग के कारण दोनों राष्ट्रों के अधिक निकट आने की संभावना बढ़ी है। भारत और श्रीलंका के बीच प्रारम्भ में विवाद का मुख्य कारण भारतीय प्रवासियों को लेकर उत्पन्न हुआ। कालान्तर में लिट्टे को नियन्त्रित करने में भारत असफल रहा तथा दोनों राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धों में और अधिक तनाव आ गया। जब 2005 में महिन्द्रा राजपक्षे के नए राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात श्रीलंका में बड़ी जातीय हिंसा तथा शान्ति प्रक्रिया के भविष्य के प्रति अनिश्चिता के कारण सम्बन्धों के निकट भविष्य में सकारात्मक सहयोग की आशा की जा सकती है।

भारत नेपाल सम्बन्धों का प्रारम्भ सुखद एवं मैत्री पूर्ण तरीके से हुआ था। लेकिन 1962 में चीन से युद्ध तथा उसके उपरान्त नेपाल का युद्ध से सम्बन्धित रवैये को देखते हुए भारत नेपाल के सन्दर्भ में अधिक चिन्तित हो गया। नेपाल द्वारा हथियारों का आयात, परमिट व्यवस्था लागू करना, नागरिकता की समस्या तथा व्यापार तथा पारगमन संधि पर विवाद आदि मतभेदों के कारण दोनों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों पर प्रश्न चिन्ह् लग गया। 2006 में नेपाल में पुनः लोकतन्त्र की बहाली के पश्चात नेपाली प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोईराला की यात्रा को पुनः सम्बन्धों में सौहार्द व मित्रता के लिए प्रयास माना जा सकता है।6 भारत–भूटान के सम्बन्धों में कभी–कभी गौण विषयों को लेकर मात्र भिन्नता अवश्य देखने को मिलती है, परन्तु गहन मतभेदों व संघर्षपूर्ण सम्बन्धों का अभाव रहा है। समय–समय पर भारत भूटान की सभी क्षेत्रों में सहायता करता रहा है। अतः वर्तमान भारतीय विदेश नीति को अब प्रस्तुत चुनौतियों की जटिलताओं का सही मूल्यांकन कर नए विकल्पों की तलाश करनी होगी। नई वैकल्पिक नीतियों के आधार पर भारत इस बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण में अपने आपको अनुकूल बनाते हुए, अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय साख को कायम करने में सफल हो पाएगा संयुक्त राष्ट्र संघ की गतिविधियों में आए परिवर्तन, गुट निरपेक्ष आन्दोलन के समझ प्रासंगिकता का सवाल, विश्व व्यापार संगठन के गठन, विश्व व्यवस्था का भूमण्डलीकरण, परमाणु अप्रसार, खाड़ी युद्ध द्वितीय तथा ईरान के परमाणु मुद्दे के परिपेक्ष्य में विश्व राजनीति के धरातल पर आए परिवर्तनों के कारण भारत की विदेश नीति के समक्ष उपस्थित नई चुनौतियों का व्यवहारिक विश्लेषण करना होगा तथा परिस्थितियों के अनुकूल अपनी विदेश नीति को आदर्शवादी के साथ–साथ व्यावहारिक भी बनाना होगा। रंगभेद, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, प्रजाति–पार्थक्य, पंचशील आदि सिद्धान्त अब पुराने पड़ गए हैं। वर्तमान परिवेश में भारतीय विदेश नीति को एक सही दिशा देने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ :–

1. आर.एस. यादव, ट्रैंड्स इन दा स्टडीज ऑन इंडियाज फारेन पालिसीः इंटरनेशनल स्टडीज वाल्यूम 30, अंक 1, पृ. 53.
2. जार्ज मॉडलस्की, ए थ्योरी ऑफ फॉरेन पॉलिसी, पृ. 6–7
3. पी.ए. रेनाल्ड्ज, इन इन्ट्रोडक्शन टू इन्टरनेशनल रिलेसन्स, पृ. 36
4. हरीश कपूर, इंडियाज फॉरन पॉलिसी, पृ. 1–27
5. वी.पी. दत्त, इंडियन फॉरन पॉलिसी इन दा न्यू एरा, वर्ड फोकस वोल्यूम 25 नं. 8 अगस्त 2004.
6. ''नेपाल में लोकतान्त्रिक विकास और भारत'' यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स वर्ष 2006 अंक पृ. 47–49